

ही ना वें इंट्या शमिशास्त्री,

बन्दे भारतीम्।
सरलाम् मृदुलाम् रसभरमञ्जुलाम्।
सर्वमङ्गलाम्। भारतीम्॥ वन्दे०॥
सत्याहिँसानयपथद् र्शिनीम्। विश्वविजयपद्वैभवभारिणीम्।
नयान्त्रताम्। दिशिदिशिजागृताम्।
ललिताम्। जननीम्। भारतीम्॥ वन्दे०॥
पीयूषायितभाषित्रभालिनीम्। चन्द्रिकरणसित्सुषुमाधारिणीम्
यशस्निम्। अमर्स्स्तीम्।
मधुराम्। परमाम्। भारतीम्॥ वन्दे०॥

वन्दे मातरम्। सुजलाम् सुफलाम् मलयजभीतलाम्। सस्यभ्यामलाम्। मातरम्॥ वन्दे०॥ भुभज्यात्स्रापुलिकत्यामिनीम्। फुल्लकुसुमितद्वमद्दलभाभिनीम्। सुहासिनीम् सुभधुरभाषिणीम् सुखदाम् वरदाम्। मातरम्॥ वन्दे०॥ ७क विश्व कर वः व्यवकः क्रावर्षा कर्मा कर्मा विश्व । ७ म न्या कर वः व्यवकः क्रावर्षा क्रावर्षा कर्मा विश्व विष्य विश्व व कुर माग्यम्भरकर अरु मुक्त

60×2000 - pagarar 27: あるとなってなるかっともかっ

उत्तरभट्टि न मूर्य में का रेर्ये र्याह्महरू राष्ट्र

क्षिर्धाः क्षाकुत स्वा यह हरीर दी गाइए 2.

ताव

हर्ने श्रिक्ट प्राप्त न प्राचित्र कार्यात्र निस्त्र या वा वर्रा हर 3.

इरवन्द्र य की की लें - ल क्रीकर र्वा र ज्यातक के

ಲಂ ಪ್ರಥಮ್ ತ್ರಸೀ ಗಂಥಂ ಕ್ಷಲ್ಪಂಪ್ರ ದಿಗೆ ಬಂಥ: = ಅಥವ್ಗಾನಂ ಎಂದೇ ಮತಕಮ. ಅನಂ

De 985.

ಕ್ಟೀ ಕ್ಟಿಂತಂ

222020

व्यः भ्रम्भार्त्र स्टिन

5 -

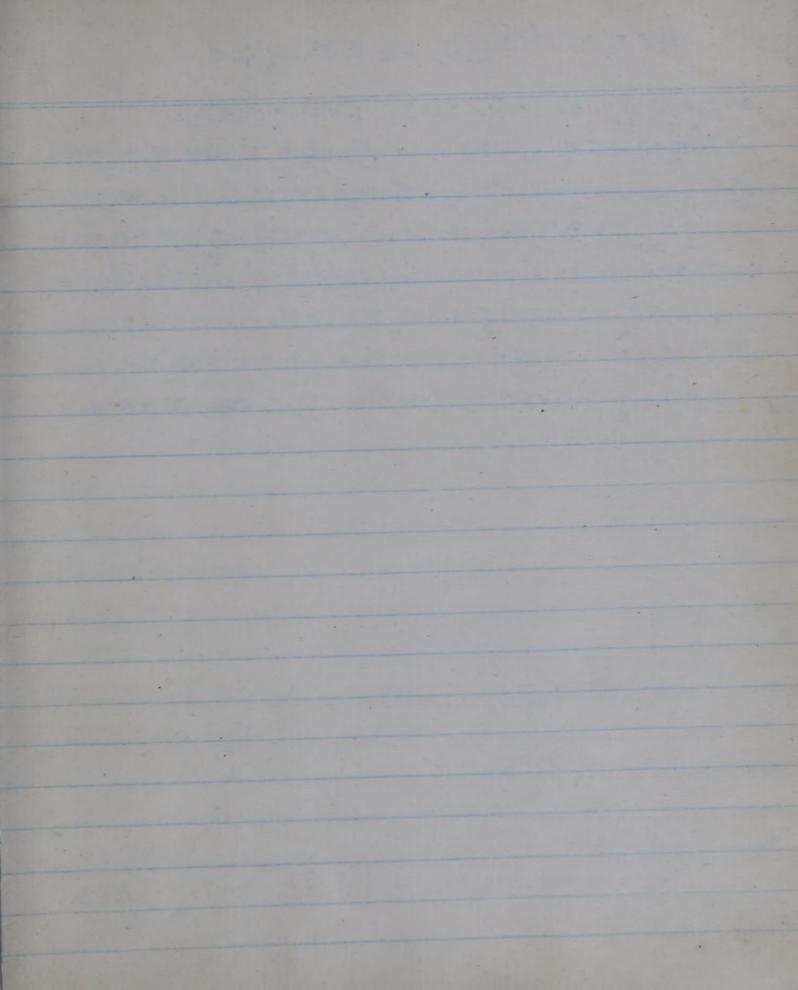
०० नाक्रेरिय किन्न

ठ० स्याउद्भ काळ

यः धया गर्मे त्रेये पुः

य० ययार्विष्ट यय्राध्यावक्षा सा स्तिका

७० व या र स्य:



成五至田园为至 五。日至日人人

स्राक्ष्य क्षेत्र के क्षेत्र के क्षेत्र के क्षित्र के स्रम् त्रात्रवर्ष्य्यान् अव्हर्ष्यक्षक्ष्या स्थ्य क्षेत्रक्ष मा अर्थ कि के विष्य कि के विषय कि वि कुरिका कुर के का की करण का की किए की व्रमे हैं किया ना की ने। त्रमें विर्वार्थित सम्भी हेल्याहरू। प्रक्रिके के कि कि प्रका का क्षिति प्रमुख्य के ॥ टर्सित ಕ್ರಪ್ಪೇಶವಾಗಿ ತಂಡು ಹಂದಾಕಿನ್ನಾ: ಸಮಹೃತಂ1 おはみりかの おととが女 xiox x20 x ならる; 11 あるxx1011 (おとから) त्रमा सं कर्म का स्ट्रीय प्रमास का से प्रभूति। ही के प्राष्ट्र के के कि कि कि कि कि कि कि कि कि मायान द्रम्य थ्रेय अर्थः क्रीशक्र स्मार्थि। 2019 ಸುರ್ತಿನ ಸ್ಥವನಂ ಕ್ರಿಯ 300 ಶರ ಸೀತ್ರ ಸು 5087 ಸು j ತನ್ನಾ ಸಂ あるみにのかりなどのようかとのあるみないとなり、1  मान्य के क्षेत्र क्षे

## थ्रिकीहर क्षेत्रक विरुट्ट करेड रेड : -

सीर्म हिर्टियामम्, 24 मार्थाः, क्षीर्यमाम्, सीर्ममम् ज्ञकार्ड क्रक्यार्मः भूगाः कृष्टकः। भूगार प्राच्यामम् क्रिकः म्यार्थः।

भारा वे उर्मिक क्रिस उर्मित प्रमा क्रिस क

ಹಿಂಬ್ ಪ್ರವಿಶ್ಯ ಮಸ್ತು ಪ್ರಾಂತ್ರಿಕ್ಟ್ ಸ್ತ್ರಾಮ್ನಾ ١

व्यक्तित्व भ्राय क्ष्य क्ष्य

स्थित क्ष्या क्

उटा मुक्किशिको इस्ट्रिक के क्रिके के क्रिके क्रिक

क्षेत्र केश्व क्रिका कर्मा कर्मी कर क्षेत्र क्

उक्रेय से १९७३० म्यायमा उद्या क यात्रार्थ वर्षेत्र ।

त्रक्षित्व। ही व्यत्र मिर्ह्स्कुर व्यक्त- व्याद्वत्ता क्षाव् हा व्यावत्त्र हिक्पादि भाई शिक्षित्र के भी ता । देश श्री । कार्या भी विश्व में है। भाई कार्या के भी विश्व है। । उर्डे उन्हें व वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के विकास का हिल्ल हळ्याके हथती वे वे विष्य अविष्य अविष्य अविषय के ति विष्य भिष्य भूजिति प्रकृ व्ययक्त्यम् । ब्रिंग जिल्ला क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग ज्या सम्बाम के में मूं वे । का का जी पक धार प्राय न हर्त न का के मूं न क्षा कर्ति का वित्र कर देश कर देश कर के स्थान करा भी है। कार्य के हिंदी के कार्य के कार के कार्य के कार के कार के कार्य के कार कार के कार कार के कार के कार कार के कार के कार कार के कार कार के कार के कार के कार करी न्या सर्मी केल्य संग्रहिंग हिंदी निक्री कर निक्षी कर निक्षी 大利のかれるがでいるのでのからからいるではないながれる」 डरार्यम् अर्ट्यार्र्ड कार किर्यान कार्य कार्या है।" इक्ष का की व्यक्तार वह देत डर जा धन्ड कर का मार्ट है। है। है। इस्मूर्व्य द्वा

यम् के यक्षी प्रक्षाय्य हो। यह प्रवाद्य द्र विष्टा विष्टा おれのはあるとのであるというないのからのできるのできるので य्यकीयात्री । यवसार योगती प्रमार में ये विष्टिया 到可以表別你是是到本到的。又是《文文》。是及到在到的的人 र्यक्षेय्यि येर्ये याद्याति १००८ १ १ वर्ष प्रकारित るれるのはなのらんをというといってもにとったなのなるはからいるは とれがからいらいななないかしのおりまるからいるのかとというしい たっわのかまりなるえのおりはいいとれてまるとのからまるからいろい रम्भेग्रीं स्रिक्षिण स्थिति स्थानिस्थिति स्थिति स्थिति 义文学到初文多数。民间的一本到6至文义是《四四四日初日 のままられるうちのものものからのからなるなるのであるままりのれるい र्य में या गी। हत्या या मी। हें अति हती प्रवास है वी भी। क्रिंग्स्युं छ क्षेत्र क्षेत्र के विष्ट्र के रक्षेत्राकी क्ष्रकारी क्ष्रकारी क्ष्रकार के नित्र के नित्रकार के न ८ इ. १ अस्ति प्रकार के अस्ति के किए अस्ति के किए असे किए में प्रातिकामत्र प्रधानिक विभाग विभाग विभाग नि ग्राम् म्याः सार्याः याः या सामाः त्री त्र्यम् इत् म्या स्वा न्यन जया र विष्ठ व द्राद्राक्ष्यक्षित्यक्ष्यकारि प्रमाप्त्रक्ष्य्यक्ष्यक्ष्यक्ष

Toplicale and prome sometime and the some property of the same of

क्षित्रभागान्त्र कर्य अवश्य क्षित्र क्

## ॥ अंततस्त्परमात्मने नमः॥

॥ शिल्ला व्यानिक प्रति ।। हिंद के का नित्र ।।।

म्यू रह्का सर्मिय्य दिना कर । श्रेम श्रुमाञ्जी यह श्रेम श्रुमाञ्जी व्या

12011 ६का वः स्टानित प्राप्ता हार स्टानित स्टानित でるはことできるとのころは、一般のとなりであるが、 हिन्द्र हिन्द् れるをことの立いるをなっているいのはいまれるはいまっている。 の元子(10年) 多子で自己の名( 中国中央 13年 3年(A:11 8)日 而此多。如何因為我們不過過過過過過 是世代到一面的一种一种的一种的人的 一河水湖湖南西河南河南河湖南南河湖湖南河河湖湖南河河河 のがは「国産者」の大きな」のとは、「西京の大の文川日本を定」 至今天河南南西西西北部。1日本河川田田西西南南南南南南 

क्रिकि के द्वा कर क्षा के विषय के कि कि कि कि कि कि कि कि रिन्याः प्रमाः प्रमाधिक ।। रियायिक मा कि म ತೃ೯೯೬ ವಿಂತರಕ್ಷ ಆಪಾ ಆರ್ ಕಿಂಗ್ ನಿಜಗುಳೀಟನ್ನು ಪರ-न्ति उत्ति॥ नित्ति।। महम्बन दिस्मा । मिर्हि॥ नित्ति।। नित्ति।। がいちはないのろのものではいるとはいるとはなるとのであるした。 क क्षा का मार्थित में कि का का मार्थित का उसी है है है कि का अप के हैं। करी। कर्षा कर्षा वहार । उर्थिक क्या कर्म कर्म कर्म कर्म हैं। ट्रह्म । शक्ताहरा है कार्य के कार्य के कार्या कार्या कार्या कार्या 07 45 अहम् कर क्ष्रिक कर प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार प्रकार कर कर कर कार का त अवकार का करा मिरका का मा हर्जा का करिका है। का राता मेर काम काम के किया महाराज्य वार भार किरा ಹಿದ್ದಿನ ತ್ರಗ್ಗೆ ಪ್ರಕ್ಷಣೆ ಆ ಪ್ರತ್ಯ ಪ್ರಸ್ತಿಗೆ ನಿಹ್ನಗ್ರ ಕರ್ತೆ. سق أ حازه اج تقاليات الله الله والقرائدة عالام العالم ではないというとうないできることをあることとのできます。

कार्रीम्पि . क्षेत्रं क्ष्य हर्ता नर्या नर्या निर्देश र्स् मुल्या , ६४४ दा राष्ट्र स्टालिया । १८ दा । 38317 张温尔 经13: 五日本日 日本五 17 元 元 天 2 安全· 0 元 亚 3° etho E 7; = 1,000 colle 90 = 1,000 = 1 en the en न्यालय के ता किर्ता किया ति स्वति भ्राय के विकास ार्डिड । जत्य द्वार स्थानित प्रदेश त्रात्र वहाड स्वाप्त । का भित्राता कर करा साथ आहे। विकास instruction of the state of the दिस्ते उत्ता ए वास्ति। मरीत क्षाउन हार । ७ हुरे व्यर्भ स्ट्र क्रिंड कुर कुर मा हिस का कि का क्रिंड मा क्रा कुर का केर क्या कुर हिंदिहरू क्या प्र काई के क्या प्र काई है। क्या कुरा निशः क्रेडिंग क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्राह्म क्रिक्ट क्राह्म के ति है कि क्राह्म के नाहे कर हैं है उ जारा: ॥ धारुक्ति।। स्तित्र मुक्ति स्टर्मा काळा स्ट्रिक्ट दला मुक्त रक्षा भारत्यों के प्रकारक रक्षित रक्षा कार १९ इ० मार्ट ही हार ही कर्ण है। हार ने कर्ष है। कर हैं हैं के काल के करा है हैं । प्रश्न के के कि के के कि

ಗಂಭೀರಸ್ಥರಸಾವವೇದನಿಲಯಂ ಹೋಧ್ಯಾನಿತಾಮು. ಧರಂ। ಅರ್ಧೇಂದದೃತಿಲೇಲವಿಂಗಲಲ ಟಾಭಾರಪಬರ್ಧೇರಗಂ ಪಂದೇ ನಿಜ್ಞಸರಾಸಾರೇಂದ್ರನಮಿತಂ ಪೂರ್ವ ಮುಖಂ ತೊಲನ:। たってができています。 近いのか 11 でんの 11 20 でんかく なかがら 20 11 20 20 11 20 でんり 20 11 20 でんり 20 でんかい 20 でんかい

॥ ७० व्याक्षित्व व्याद्व व्याद्व विक्ति विक्ति विक्रिक क्ष्रित थ0 क्या क्टूर तक:। त० तार्रे निष्ठी तक:। क्रिश् थण धार्य । यूर क्या गळा। त्र इ० विष्टा य० व्यायकार। ३० वर्ष व्यायका । य० चार व्यायका ना नास्ता । ००० नामाभा त्रा ।। १०॥ क्रामित्र क्राम्य व्य २०१४१६ वर्ष्य १८० ८०॥ त्रिक्र कर्षे र्यः। त्रिक्र कर् हाक प्रयः। का कि हिन्दा प्रयः। का महिन्छ। प्रवास प्रयः। का की वर 2011 - 20 1 1 20 MOI XX: 1 XX 20 FOR XX: 1 XX 20 FOR ON ON 12:18 2/05 22:18 2/00 mar 22:1820 20:18200-माठः म्यः। वियारिक म्यः। वियर्धः माव्यं म्यः। वियाव्यं म्यः। りまる」というでは、一般でして、スカ:一般でしいのかは、一般でして 7 35: 1 12 3 30. MOX 75: 1 25 05 00 75: 1 25 05 10 MOX 75: 1 र्भायकार्य ।। यह काल्यकार्य त्या ।। ६० ८ कालिक्षिक - कर्य では出ていまれているといれるは、またのでは、またので 

नियानी विस्थानिय में में हैं हैं के किए हैं। है निया है

ಮಂದ್ರ ದಕ್ಷಿನಾಮಾತ್ರಕನ್ನ ಹುಟಲಭ್ಯಭಾಗಕಾದ್ಯ ಮುಖಂ॥ ಓಂ ಇಂ॥ ೭೬೦ ಭಂ ೭೦ ಭೂ ಇಂ॥ ಕಂ ಓಂ॥ ಓಂ ಸತ್ತೀ ಭಗವತ್ತ ಹಡ್ಡಾರ್ ॥ ಓಂ ಮಂ॥ ದಕ್ಷಿನಾಮುಖಾಯ ಸಹ:॥ (ಇತಿ ಹಕ್ಷಿನಾಂಗನ್ನಾಡ:)

201 मिन्स भारत कार्य न - प्रक्रास्य कार्यः ॥ वाराम् ०॥ गळक्ष्या । क्ष्या । क्ष्या व्याप्ति । क्ष्या । と母にかればなーーー かはからかいはいにははないにはまれたの これは一一一の工作をはないでのです。11をからなりはいることのは、この一一となると 万日の元に出かりのはいでは、でか:112011もあるののでのと大利はのといる1-がんなみてきの ものからののでのであるのでいるかいいいい 2 got you 8 82000 & 82/13, 1 22 80 20 20 20 4 2 3 10 20 40 2 3 10 m-可力· での以下、22310 不断236 配る。11 20 20 00 00 00 00 00 10 10 00 11 からのでではいいとのをかりとうのでははのかーーーを必じているかい CAT TOIL DICHOTIZED 230 DE BOTGETO HIL & 100 TO なれないがあるからのあるがとうというといいというと

 250 = 360 50

0

यायायात्या भर्ग अरनः। निया है याद्र श स्ट्रा METONO STONE LES DACHET: 10000 60 Kgg 47 61 ではなるというないのできたというとうのはながしたのがいからずはいかし रिधाल्या एक हैं। क विस्ताल है में किया है। है किया है। है के में किया है। るないというとうというないに、このははいいこれは、大きないかってり かっきてきる からいい あったい あてはてまないまるにあったにあるだ TO THIES TO TO THIS TO TO TO NO. I STONE WATERY 五人の不可の日本の日子をはなって、五日本の日本は、一名の人 हर्तित छ. माक्टडिए छेत्र की छ० मतागळहाः की करा निक्र

८०० क्रिक्र के हा है है है है कि क्रिक्ट के प्रतिक के से ।

उन् कार हरी। यह कार्य अधिय वार्ष क्रिकार या अधिया। कर कर् यळार्य्य की श्रिक क्ष्म्य की की की की कि प्राप्त मिन । या ये प्राप्त मिन । 1100 त्र 11 यम् व्यू हिं वस्त्र वर्षा व्यू । कि त्र वर्ष यम् वर्ष के का करा। कि त्र वर्ष 11 一分の 100 11 かんのは、このかれなのできるはいのからではまりのから 記る可能」の政権が代本工程等の語の主義、四日日本、語意、方。及出意 ०० द्याय ॥ त्य मूक्य वर्ष १५ ॥ ४०० की । द्य । य । य । य । य । य । य । रकी धरम्ब क्षाया क्या का की हिंगा की हिंदी ではいいできる: 11311202525 2012:1200年011 色知力の至めている रकार्षे के प्रमान हिल्ला के मिल्या में ने 10 में के कि कि कि के कि कि कि कि 2525021 75:11811:00 2×2×5×2×5×100 11811:15 0×100 11811:15 यंग्या भारत्या वात्राम् व्यथ्य नित्र विकास to 2310 7 10 7 7 8 000: 5 04 1 1: 1 7 0 7 0 7 25 11 20 الما ا عنه المعدد المع といきるにはなることのできることではいる。これにはいるとかないのできている。 ವ:11 ಎಂ ೦೦ 01 % ಕ್ಟ್ ಶಿಯ್ದಾ ಕೃತಿನೀಭಿಕ್ಕರಂ 1 ನೆಹ್ಡು ಕ್ರೀಭಿಕ್ರಿಯಾಯನ್ನು ನಿ का क्षण । व्यक्ष हिम्ह क्ष्यन व्यावक्ष का व्यक्ष व्यावका का विकास का 一一、川方が変のなるはいいのかの日の大きなではあります。 こずでに、これにからいかにきまでいる。これのあるが、これのでは、これに

2343:10年20年163年163年17 日日 7127 月日日11 では、これは、これには、はないないでは、からは、これには、ないか माउगास्त कार्यास के क्रिकेट लिए कार्य मार कार्य के कि मार्थ के 20259 ( = Fys: 1 0000 11 Jen 3 70 27 3 7 20 7 30 600 62 7. 副(cour) 西島 別、馬、四、 ス son 等、 ran で 1 8 o & o 11 字 い に で に 大 正 か roo थार ने प्राप्त विकास मिल्ला मिल्ला कि विकास कर । । ताथ कुर できていている。「2002年中ではでは、こ、 あっていり とき エエ こここと या हर है के व्याप्त है स्वर्ध है के वर्ष है के वर्ष इ. नि. प्राची हर्षे हर्ष हर्ष प्राची ।। प्रमेर मेर मेर मेर ।। शा वा ना भू भू दिन की विशेष के । कि यद्या कर के के के के के कि कि के कि कि की णाव्य त्याः। व्याप्तत्याम् किनामावय त्यः॥ है। २०१८ १८८ मार्ग्स्यः। ॥०४० है। स्मित्र इकि धनार् हैं न ने ये ये में रिस् निर्म できずっとははいるのかのになっないところにころにはいれるからいというころ あったっている。本意はははいいない。 カロカス こうにかいいにいいい 1、23 20年の元のに見るなるの人のからまである。日本は、日本の人のからまできる。 २०१५ १६ न का वा ।। १०००।। त्य मूल्य भी १६।। अभूक की मा का कि 110000011 द्रम्य हर्य मार्ट कार कर । कि नकी प्रमाय में प्राचित्र 15 x: 13 37 8 00 000 x x x: 11 1 11 20 27 82 5 6 2 7 12: 11 21 0 40 11

क्रिकार क्रिक्ट केर्निक क्रिका निक्र के क्रिका २० रद्या प्रत्ये क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र रूका क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र 可愛をラーー 11万世まりですっぱいはいないはいないとしてはないといるがにない क्ष्रियं प्रकाळ्या न्याक्ष्रि त्रमः॥ न्याक्ष्रिये प्रकाळ त्यः॥३॥१०० १४/१६ ह्या स्थाय:॥ १० म्०॥ म्वर्षिक में १६ ॥ क्ष्रिक मा निर्मा निर्मा 11年本土ののようはないはないのはないないはないのできょうないできるというないはんしま ळ ज्ञा थ थ थ वा भारत र र र । १ थ थ व व र र र र । १ ॥ १० १४ । では、では、これのいのは、これには、これには、これのでは、これにはいいいという。 可以可以以前因此的一种是一种的人的 おいまえんなとこれがないはないいのいとはなるまでは、ましてのまりのなるかっている のはらり--11を記録のなるのはいいのかのはないとはないというというのはいる とのなりときをとれば、これののなの川がはなっているというできることのできている。その川 できることによっていることがないとのできているいとうになっていることになっている काशायर्थः। काश्यम् राष्ट्रायः। काश्यम् विवाद्यः।। कार्यः।। कार्यः।। न्याक्ष्यं रहा क्रिक्षिय क्षित्र क्षित かのにはりながらばがしてまればなりになっていまっているのでは、そので 不可以不可以不可以以此是一次一次一次一次一次一次一次一次一次一次一次

क्र निवास नी सह --॥ त्यक्ष प्रदेश में देश प्रमाय कर विकार केर १००४१४६४६४५४ ।। १००० ॥ तय द्वा १५ १६ ॥ 20 द द्वा १ १ वर्ष का संस् गर्दा できていれることにはなるとととなってのなりのではいるのというというないのでは क्षिक्षक त्यः। क्षिक्ष्यम् ते क्षिक्ष त्यः॥००॥ ६० १म १म ह्या यः॥ 11200011スエグロからま11年の天子子のスケアをではできる--11スでありてから11 11 2020112年22年2月20日かりといるといるのではなるのではのは110点0元11 नार्ष्यात्रे कार्या अस्ता १००० वर्षा देन हर्य हर्षा ।। १००० । यस देन देन हर 6% को क्रिक्र के का का का की कि हु। - 11 राज की गर्म हु। का का का थि। यह कार्य के प्रवर्ष । के वर्ष धार्य के वर्ष । वर्ष के वर्ष । ।। もいれるではないはいはいはのなってできるができるというというなするこ ではりまりないのでは、それる地震できてのはででし、一人かないないといもった 11:25 ನ ವಿಧ್ಯಪರು ಸಮ್ಮಪ್ಪನ ಪ್ರಮಾದ ಅನುಭಾರಿ ನಮ:11 はずるというはのはいことはなるようにはのはいましては、これにはいいいとはないい 20年年下五天八五:11200011万女女女女生1102018前日前日子--11五女女女女生 このでは、これのでは、いかいというないとのなってのでは、これのでは、これのでは、これのできるので भारत्य के निक्ति म्राम्या क्रिया क्रिया क्रिया विकास निकास विकास निकास निकास मिल्या मिल्य

ಹನೇ ಜ್ಯೀತಿರ್ಬುಕ್ರವರ್ಷ್ಯ ವಿಚ್ಚಿನ್ನಂ ಯಟ್ಟಗೆ ಸಮಿಹ ಹಥತು ಬೃಹಸ್ಪತಿ-मुत्र माध्यक तीर अर्थे के वा प्रकार कर का मा का कर में का कि के कि मा म् अक्ष समामा स्वित्रं म अव्यव्यव्य स्थाम । व्यक्ष व्यव्य स्था का स्था व क्यभार्य्य में प्रवेश नाह्य है। नाक्षी र्यः ॥ हम्य् नाह वयः इस हा वः व्याप्ता हकः। € क्यार्ति विशासिकी सेर् 3 ॥ क्षांचळ कर र्यः ॥ क्या क्रूति करी। ६४० क्यांकिक्या क्रिया र्यु गार्ति -क्या गळा क्षा र क्या है विश्व कि मार क्या है कि स्मामा क्या मार मार क्या है। हैं निक रकः। कर्म में में वर्षानी प्रकाल कुर क्षा क्षा का का क्षी क्षा की का कि कार्ष्या अवस्ति हिस् सक्त है के सक्त के कार के क्षा है। सार्ज्या व्यव वार्षात्र । जेशुर्ति। व्यव वा क्षेत्र्याक्षित्र । ये द्वानिष् थि। जाकतं र्युक्षि कर्ता यात्रहः है विष्या महा वार्ष महे, क्र व रवार्ष य का ठाळ र न्या हिल कर ।। १०० ११ ११ १८० मा ।। १० मा ना मा ना मा कर है ळाडी। ज्य केश वर्षः। जीतातीता क्या व्यक्ष १ थे० वर्ष वर्ष वर्ष १ थे० वर्ष न्या क्या कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य निर्मार कार निर्मार मार्थ ।। ಗಾರಂ ಕುಂಕುಮವಂಕಿಲಂ ಸುತಿಲಕಂ ವ್ಯಾಪಾಂಡ ನಂಡಸ್ಥಲಂ

शिक्रिय्यात्री हत्। व्यक्षाया व्यव्या श्रम्या या विष्टि । सर्म्या व्या त्रक्षेत्रक के नार्को देः। उ० का टडि वह क्षित्र में कि का पर म् अद्भे सका है हा। यका है है का व्यक्त क्षेत्रा : भिर्मा रूमे ग्रिक् म्या निष्ठ महाक्ष्य में क्रिन हिंदी महाक नि यूर्य है। स्ट्राह्म के के को नाकी के । यह का रहित स्ट्राह्म स्ट्राह्म स्ट्राह्म क्रिर्जाम्यार्ष्ट्रं में स्कार्ट्रिश स्कार्ट्र में क्रिया विस्कार्य के में मार्थिया किंग्रेयों किंग ०० उ। उन्हें क् क्रिंग का उ: क्या श्रिक हो । में क्या अपटा अपटा के । क्या अपटा करी तानी में। उठ वा उर्मा क्षित्रमें मार्थित मार्थित मार्थित है। या विष्टित है मार्थित विष्टित विष्टित क्षिक् ये व्या । किर्योर्षियोक्ष्ये व्या । किर्योर्षियोक्ष्ये व्या । व्या म्हिल्डे। म स्वरहस्त्रिश्ड्यू । स्वरहस्त्रिश्च स्वर्गित स्वर्धः। रेव म रे रेव 2025 क् उति 50 501 2025 कि अम् या कि मा मिल कि का निया कि क्षाः। कर्मार्मिर्मिर्मिर्मिरम् क्षात्रा द्वा द्वा द्वा द्वा क्षात्रा भ्रम् १९३ कार साड क्ष्य है। १५ से कार है। का की लाकी हैं। उठ का कर है से कार है से स्व ३०। १६ से की हा से की हैं है। यह है है। यह है कि वा निय के यह या। । इन क्याना व विक नी कि में कि ति कि हैं। क्या है। विकी मामाभा कि लेंडा

उत्यास्य ॥ त्र्राह्म हिल्ला क्षाया त्र्राध्य । या विक्रि हिल्ला मेरहा । क्षाया क्षाया विक्र हिल्ला क्षाया विक्र

112011 व्यक्तित्व व्याउ० थ्या व्याप्त व्याच्या क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष कीर कर्सू मुक्र में मूर्य किए वा उत्हें क्रत्र मूर्य मा ना कीत हमहा श्री श्री हिला कर्मा का की का का का का का का का का का की निकास की क्रिक अत्र मुं १६ वर्ष वर्ष न ॥ न ॥ की त हं कार हरू में मेर अति के कि उत्री क्यर-॥२॥ क्यू मूलक्या द्वा देशका क्र विष्ट्री क्यू है। क्रिका व्यक्ति करते हैं कि है कर है करते हैं कर नारे। क्रिका वक्षवश्चीभ्य व्यक्ष्या प्रमास्त्री भी भी का का कि विक्रिये య विश्व कि के के कि विश्व विश्व कर्त - ॥ अ॥ व्यक्षित् विश्व क्षित्र विश्व विश्व विश्व ದಕ್ಕರಾತ್ರಗೆಂತಕಂ ಯಕ್ಷಕಂ ತನ್ನೇ ಮನ-11211 ಯಜ್ಜಾಗ, ತೇಂದೂರಮು-त्युं अ क्या उत्पाद्ध क्या वक्षेत्र विष्यु विषय कार्या विषय क्षेत्र विकार क्षेत्र क् उत्रिक्त न ।। ए।। कितीय अर्थ सम्मा ध्यमार्थ के किया अक्र केर धाउँ दे वाः। उद्या का मू क् व्या का मू मू क्र क्षे व्या मू मू क्र क्षे अत्मार्कः म्हामा अत-॥no॥ ade अतार क्वांक्रणे केरिक्षां मा

क्षिया सक्त की क्र या पर्ने । की कार्य सम्भाव सम्भाव सम्भाव मा क्रा - 11 NUII हा हिन्द्र के कि कि कि कि कि कि कि कि कि ಯೇ ಪಂಚ ಪಂಚಾದಕ ಕರಗಂ ಸಹಕ್ರಮಯುತ್ತ ಸ್ಟರ್ಬುದಂ ಚ ಯೀ ಅಗ್ನಿಚಿತ್ರಪ್ರಕ್ರ-ಸ್ಥಾಗೆ ತಾರಂ ತನ್ನೆ ಮನ-॥ ೧೪॥ ವೇದಹಮೀತ ಪುರುಪಂ ಮಹಾತಮಡಿತ್ಯವರ್ನ ತಮ್ ನ: ಪ್ರಸ್ತಾತೆ। ಯನ್ನ ಯೇನಿಂ ಪಂಪ್ ಸ್ಟಂತಿ ಧೀರ್ ಸ್ಟ್ರೆಕ್ನೆ ಮನ-110% ಉದ್ದೈತ್ತ ಧೀರಾ: ಪ್ರಸಂತಿ ಕವಯೇ ಬ್ರಹ್ಮಾಕಾಯೇತ್ ಸ್ತ್ರಾಪ್ಟಕ್ ತಮಿಂದು : ಸ್ಥಾವರು ಒಂಗಮಂ ह्या मिना के उर्देश क्यत-॥ तहा का महा कर मह उद्या महा करें। का -इन मुर् अरिक्ष कर्ष कर्न ॥ १०॥ कन्यु ४४० १६ वर्ष अर्थ वर्षे वर्षे ठ०। उड्डा गर्ड उडेल श्री क्या जन ॥ तथा क्या भी कार्य माक्ष्य माक्ष्य है। म्या क्री के का क्षिति । का प्राधानि का के कारी के क्षित का का ना पर । पर । कि की क्षित क्षायात्या ख्रांक्य : क्षा हार क्षेत्र है: । क्षा हा मार्थित मार्थित क्षेत्र देश क्षा न 19011 Das: 25 Jeo 3 20 25 20 25 20 25 20 20 1 20 3 10 25 20 -गुरु उत् कर्न - 119011 ohes ही हार्य के की की क का का का कार्य तः। हिम्नान प्रप्रध्यात व्योग न्यं क्ये- गठेग प्राधिकारहै. क्रीत क्रिक्षा १५ शर्मत ६। श्राध्य वक्षणः श्रीकृष्ठ उत् अत-11371 द्वा शहर व्यक्षान्यहार स्ट्रांटिक की दी व्यक्ष्य । कार्या क्रिक्र का का की तात् व्यार क्यार है एक व्याव्या गर्ड अर्ल क्या । १९ ॥ में भारती अर्थ र व्यो १ का स्टूरी कु चाराक्र । एए या मार्थिय के प्राप्त कर नामिता है ते कि का कि नामिता है ते कि का कि नामिता है ते कि रेशानाति कि कार्य विकित्ति है का निए है कि है कि उन मिहा

वर्षेत्रमें के प्रत्र वर्षेत्र कार्य ಹೀ ವೇದ್ರಸ್ಥೀಯಾತ ಸರ್ವಶ್ರಾಸ್ತ್ರಮಯಂ ವಿದ:। ಇತಿಹಾಸಪುರಾಣಾಗಿ ತಸ್ನೇ ಮಸ ಉಕ್ಷಿ ४०। ಮ ನ್ನು ಪರ್ಕೀ ವಿತರಂ ಮೇತ ಮತರಂ ಪ್ರಿಯ ಮ ಸಸ್ಯಸ್ಥೆನು ಪ್ರೇ ठात १९०६ मू तर् क्यान-॥ १९॥ व्या त्र मेशु ही उत्वार व्या त सव्याद व्या नीर क्षेरक का नीर एक्ट्रिक ११०कः। करियानी कर क्षेत्रका कार यक्षि क्र विक्र निर्मा अभीक के उनी क्र नाव्णा अर्थनित है. ವಿ. ನ್ಯೂ ನ್ ಹ್ ಪ್ರೆಯ ಕ್ಲಿ ಪ್ರಿಯ ಪ್ರಾಕ್ ಪ್ರಾಲ್ ನಿ ನ್ಯೂ ಪ್ರಾಕ್ಷೆ ಪ್ರಿಯ ಪ್ರಾಕ್ ಪ್ರಾಕ್ ಪ್ರಿಯ ಪ್ರಾಕ್ ಪ್ರಾಕ್ ಪ್ರಾಕ್ ಪ್ರಿಯ ಪ್ರಾಕ್ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಾಕ್ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಿಸ್ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ ಪ್ರಕ್ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರವ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರಕ್ಷ ಪ್ರ ठाका के तथीर तक मुत्री कर नाया। हिस का क कार्य कर क्ष्यूर्ट्या उन्यामि । जी एक्टिय के उन्मित कार्या। मिर्द्यात के वि राष्ट्रम् मृतु राष्ट्राक तजीत हरू उर्देश कर्म-॥कु॥ श्रष्ट्र स्ट्राह्म क ಥಮಂ ಪ್ರಶಸ್ತ್ರಿ ಕ್ಷೀಮತಸ್ಸು ಹಚಿಕೋ ವೇಸ ಅವ: 1 ಸ ಬುಧ್ನಿಯ ಉಪಪ್ एम् निक्षित्र के क्षित्र क्ष्रिक किर्य के निक्षित्र के किर्य निक्षित्र के किर्य त्रध्यक्षेत का का देश है विकास समझे राया वा मही हम् व-यात्र मुस्य क्षा वा मिया कर करी का निर्मा करते का निर्मा क्ष सर्वा थण्या कर्षा नुर लक्षा कर्ष क्षा कर्षा कर्षा कर्षा कर्षा भाव्यान् क्ष्यान क्ष्यानाः इक्षेत्र व्याक्ष क्षान् नर्भाक्ष नर्भा क्रांग-1129 11 कर्मा कर्मा कर्मा हिस्से क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक भी के का निष्ट के के काल प्रमात है के कि कार नार्टा प्रमात की कि कार नार्टा प्रमाण के कि कार की कि कार की कि कार मान्या कि कार की कि का ह्यान क्रिक्टि भेडीकी की कि हिल्ली हैं। में के विष्यु स्थान

॥६०॥ महत्र के द्वार क्ष्यः।... (धम्र कार्षः) ०० ड्र क्ष्येत माम्त्राम् विषयः। क्ष्येत्वा क्ष्येत्व क्ष्येत्वा क्ष्येत्व क्ष्येत्वा क्ष्येत्वा

क्रिक्निहा ।। १० मंद्री प्रमाय में प्रमाय ।। श्रम् व्याविक हित विभावी यह ही ।। 112011 रिक्र है हो पूर्व की के दिन प्रमार प्रकार के प्राचितः के कि कि कि कि ನಾಂ। ಸಂಕ್ರಂದನ್ನೋ ನಿಮಿಷ್ಠ ಒಕ್ಕಾರಶ್ವತಗೆ ಹೇಗಾ ಒಬಂದ गुಕ್ಷ ಮಿಂದ್ರ:। ಸಂಕ್ರಂ-यम्त्रिक क्षेत्रहा कि का कि वा कि थियर उद्गलमून व्यक्षित्र व्यक्षित्र व्यक्ष्यात्र व्यक्ष्यात्र व्यक्ष्यात्र निध्यहरी मर्त्नम् म्या मळ्यम् विकार तरम्ता मर्तन्म अर्थिया शास्त्रक्षात्वहरूता मुडळगण्यत्या । शास्त्रम् म्यान्यात्या म्यान्यात्या ०० त्रम् रे के दि अ व विष्या । तीर र क्षेत्र तीर अ क र क्षेत्र का कि कि का कि यह स्यामा १ वर्षात मधा । वर्षात भी । वर्षात भ म्याक्षाहरू मार्गिक्षण । श्री भी क्षेत्र के निर्देश के कि कि कि कि मकारात भागः। ६ किया क्षित ६ किया में प्रमाण क्षेत्र का विस् मार्थार । हार्य प्रस्ति मार्था मार्था मार्था मार्था मार्था निया है।

ದು ಶ್ವವನ: ಹೃತಾನಾಪ್ರಿಡಯ ಧ್ಯೇತಸ್ಥಾಕ ನಂ ಸೇನಾ ಅವಕು ಪ್ರಯ ಥ್ಯು 1 ಇಂದ್ರ ಖನಾಂ ನೇತಾ ಬೃಹಸ್ಪತಿರ್ದಕ್ಷಿಣಾ ಯಜ್ಞ: ಪುರ ಎತು ಸುಣಮಾಡಿದೆನೆಗೆ ನಾನಾ-र्याथ्याम् अहमा विकाशका अवसी करा में विकास मार्थित मार्थित ಕಾನ್ ರಾಜ್ ಆದಿಶ್ರಾನಾಂ ಮಹರಾಗಿಂ ಕರ್ಧ ಉಗ್ರಂ | ಮಹಾಸನನಾಂ ಭವನಚ್ ब्याता के कीए प्राच्याता धकारा प्राच्या प्राच्या है। हिम्म हिन्दी की प्राच्या में क् भी मू माइ० क्या वर्ष माम मक्ता मा करा हिमाइ० करण लाइम मिया -इ.म् र वर्ष्य ६ वर्ष वर्षा श्वा श्वा वर्षि । श्वा वर्षिक वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे 例至前の 武成門前の武阿府の名「如真」了成門是前の司里河太一 四年,可见此面出代的母代本。10年110日超过20公司方达到可公共。 क काल्यः। यन्त्री यश्रम् व्यक्षम् व्यक्षम् व्यक्षम् यण यर यर दे १ १ कि सम् १ वी मा मही का या मिला है एसे न्तरिक्तः। क्रक्सारः त् वर्षायक्ष्मा ह्या क्रिक्स मार्थिक उन्मार्क्यकी । काष्ट्रियर कार्या यह यह है है के कार है है के कार है क्षीर त्रक्र में में हिला सम्हान में महिला म यूष्य कर्त्याक्षा की में यो किया किया हथ हर हर हर हर हर निर्मित्र के क्षित कर्मा क्ष्मिर क्ष्मिर क्ष्मित क्ष्मित क्ष्मित क्ष्मित क्ष्मित क्ष 时,数33年至成四世日 6030年。2030年。2030年。2031年21月日 

14011 23 21 प्रस्ती हर या प्राय्या यह यह है है का वह है के व्याय की प्राय् है। है। भी : हे के हैं ठ० किया नारि रिकारि रिकार के किया किया किया है। ವೀಯಾತ್ರಿಕ ವವ ರುದ್ರೇ ನ ಪ್ರತೀಯ್ಯಯ ತನ್ನ ಟಿಖುನ್ನ ರಹ, ಪತ್ತ. र कार्य के के वर प्राथन प्राथन प्राथन के कार्य के कार कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार सः पत्री अवर जी क्षेत्र कार्य कार हिंदी व क्षेत्र कर क्रार्थिद्धा व्यक्ति क्रिया क्रिया व्याप्त क्रिया विया थ क्रिया म् विस्त्र मिन्द्र कुल्येहिल। व्यक्त महिल्ला हिन्द्र का र्या अस्तः इरदाक रः श्रम् रः इरदाका भा यायमा-कर कर है। क्रिक्ट कर क्रा कर की क्रा प्रकेश कर प्रकेश कर प्र लियार कर्रकाय कार्याया क्रीहर्ष केंद्र या क्री या क्री वार्ट । रहेंद्र व्या क्षा की प्राप्त के कार्त्र की प्रायम् य क्षा कार प्रमाद कर की प्रमाद पर्या न्या न्या स्ट्रा होते चाथा।। चे उद्याप के कु (इ इचा ता ये पर कर 3 रत्य द्वासा राष्ट्राभारत्यवळ द्या। यह इस्याम स्वयः व । यह इसे य から、かんなはななる。120元年120元310元日前120万日3160元日 52105040 प्राप्त कर्योत्र । राष्ट्रार्टिक प्रया स्थिए क्रिया विकार कर कर कर है। हिन्त की क्रिया कर मिला है। मिका कर कि रहात हाह छत्। हा हा का प्राचित हा हा हा हा हा हा हा हा है। हिता में स्थापत ने किसी है। व्यापत विकास करिया। वस्ते। न्या १०६५३। व्याप्त म्या है। है कि स्थाप क्या है। या विकास न्या है। या विकास न्या है। या विकास न्या 

या हम्मा क्षित्र मार । हम्यर्जीय कार्षात्र मार्थित स्थित र्य रूषः अर्यक्रम् । रुक् वे रूष्ट्र म्या म्या क्रिकार्या र्या हिम्नि हिम्न हिम । उक्त हा रूद अम्भी क्ष्य है। उक्षी नीय प्र के के के का का निक्षि प्र प्र निक्षि । का या निक्ष क् अधिन अभि। उर्धिहर व्यक्ष वर्षि व्यक्षिति व्यक्षिति कान्या अवन का की निष्ण । कार्या १०३। क्षेत्र का की। कार्या है। गुर्मि १०३। व्यक् धरु व्यक्षेड्य मन्द्रिश ग्राम्य वर्ष । क्ष्मि के ಹ್ಳಾಗ ಇವು ಹ ನಿರವಕ್ಕೆ 31 ಅಪ್ರತೀಕ್ಷೆ ಮಯಂತಿ 1 ಅಪ್ಪ ಪರಿಕ್ರಿಂಚಿತಿ 1 ಹ ए त्री १ वर्ष है । के वर्ष वर्ष हैं कि वर्ष । कु वर्ष । ಈದಿತ್ಯಂ ಚಿರುಂ ಶ್ರಸರೀತ್ರ ನಿರ್ವಹತಿ 1 ಇಯಂ ವಾ ೬ ದಿತಿ: 1 ೬ ಸ್ಪುಪೀವ ಹತಿ क्ष उ०। जाउद्यादी क्षि हथ्य वर्षे राज्याः रामी स्थाप のかは311とのではなるながなるのは、あるのは、からいのはるでした。 निस्ति कामण हिंदीहर हिर्दित

॥१०॥ द्वां क्रिक्ष एक्षिक व्यक्षित व्यक्ष्म व्यक्षित व्यक्ष व्यक्षित व्यक्ष व्य

हैय: राष्ट्री के अराजा का द्वार ही भीषा कात करी ली है। या की कर् からなるのなとといればいなからなるはにはないるのかにのないのではなり त्रीयकार्ति ही द्वार क्रिय हिर्देश के का का मार्थ निकालित हिम्सि क्षिति क स्प्र के विषय प्रायमित विषय कर्ति कर में क्या मा । विकाय करी क्य नार क्रिक्र मिल्रा मिल्रा कि कि कार्य है। यह कि जा कि निरम् क क्रिक्र ಸ್ಸುಕ್ತಿ ಕರ್ಯ: ಪ್ರಥಕ 1 ಅರ್ಗೇ ಕಾರ್ಯಯ ಯೇಟುಗ 1 ಅವುವ ಕಂ ಕಾರ! करी उद्गार्थ का प्रकार प्रकार प्रकार का निका कर ना निका कर निका कर ना निका कर निका कर ना निका कर निका कर ना निका कर ना नि कारगतीर क्यांक रवास्र। वर्षा श्रम् श्रम् करि रक्षा मिर्देगर-म् मार्ग मार स्रम् हिंद्र में हिंद्र में मार महिंद्र हिंदी कर हिंदी हैं। क्या कार्यहें ही । र्मा किल्लाह कर्ण कर्मा कर्मा क्रिक्स क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र एक। क्षीय क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षित क्षित्र क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र उत्रेषु में व्याष्ट्र कार्या कार्या के ति कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य 301 वन्त्रात क्षेत्र के स्मित्र हिंदे अल्ल सह साउन्या ।। 231 DE 20 25 2 20 20 ERY ONO DIX SXO STORY DAG: 1 25 63; चायह यन्त्रीहर्या मीक के कुरह हुए। इन खें के के कार व: । प्राथायन 

कर्त्य विकारकि वी प्राथ प्रीयत थ्य क्षेत्र था।। किला वर्ष प्रीय ३० उति क्ष्य समित क्षेत्र प्रकृष्ट प्राप्ति । हिर्मिय प्रमान क्ष्य वि र्यु श्री नेक्क स्रक्षियक वही। श्री कि क्ष्य यथा मेर र में क्रम्रिक्ष के यहा। हथी। श्रष्ट क्राय्य क्राय्य क्राय्य क्राय्य निक्रीक्र के विकास निक्रिया निक्रिय निक्रिया निक्रिय न रकार्थ प्रहार हिन्दे । में पूर क प्रमी हिन्दे मार या या मिला प्राथ राष्ट्री त्याक रशत्याक स्थित व्याक्ति के विक्षी स्थित विष्टि प्रकेश यवा क स्मार्थ हर्षा व्रक्ष १३ हर हर हरा देश मार्य 220 2 en あととととといかりあれてあられることをはいることはあのない र्यं विष्य विष्य कि हा । । हिंद कि हिं या कि विषय कि हिं या । हिंदी स्त्र में का हर्ष श्रुद्ध भागाती। एवंद्यी क्षि एका का का। ह तीर जारह करिन्द्रमा अंग्या करिन्द्रमा अविद्वार रहे क्षित्र । यह निष्य क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र के विषय है। क्षित्र ಯನ್ ಸಂ ಜನ್ ಸ: 1 ಆರ್ ತಿನ್ ಚಿನ್ನ ತ್ರಾನ್ ಹೆಂದ್ ನ್ ಚೆ: ಕನ: श्चार के ११इ व कि हैं। कि एपी। के हिला के चे के के कि है। व कि व उर क्षिणे अधिक के विस्टा ।। देन में प्रचार हे अपरा कर्षा एवं। 更大。 多時代 かんろの あば かけぬ 1 至の ごろうでにかり 1 40×0下:1 र क्रमा अव उ ति क र ता विता क्रिके क क्रमा क्रमा 南京城城市 金加尼日曾到四江至了到四城市 金加城中一至到四十 李玉本作年 了如于1953年后: 至08年出年,至02501 2085 是是一个可证是一个是是是是是是一个人 到一种自己是一种 不正常的 医血蛋白的 不可不可以不可以 एक्स रक्षाद्यां के बिलाई । रक्षाद्य के बिलाई ने बिलाई ने बिलाई ने बिलाई माम्बर्गायमान्य द्वान्य निवान्य मान्य निवान्य निवान्य निवान्य निवान्य निवान्य निवान्य निवान्य निवान्य निवान्य याः य्वाद्रप्रम् विष्टि। य्वाद्रप्रम् विष्टिश्यं के विष्टिता के विष्टि र् प्रांक राज्य दे । प्रत्य विशे हिंदी प्रांक र विशेष है । हिंदी प्रांक र विशेष ने みんのでは、そのでは、これであるとれるかのできまっているかのかのというかんのでは、 これの対象を変してきるからの なるがられるからのできるからろう。 あるかんのかのはなるのでは、そのかにこれのかっているでは、そのから るまでいている。このまるというないないないできるというないまです。 かんしていていることのできるというできることのできるからす 6. 新日本省中国地市316年日本河 25元月3天·新年五里地市3 こうになるからなるとのでは、そのからいというないないまとうないまという ことうというはいかられまるのでだらしからというないないましょう マシェスのえんとうないのできているはのはいるにのいるなんとからだい かみにはおきまないかにまりますがなるながでいるのう。ないない 271年にこれにころいているとはのは、1180日のようが、き、からのおこであるとなり ·为不知是至何在写图·所上的是有意识 (2)是可能 为安全不会!! 

20050 20000 200 11 200 200 11 25 25 25 11 000 200 11 000 200 11 000 200 11 25 25 25 प्रमायहक्ति वाया का विकाद का 四名是人人是一个在一个人

या है या है ते हों उठ किये का ए० व्या छ छ उड़ा उहा उ ತಸ್ಪಿದತ್ಯಕ್ಷತ್ತಪಕ್ಷರತ್ರಾತಿ ಹೇಯಂ ನಿರ್ವಹಣಗಳು:1 यः वर्ष ग्रम्मय १६० व्रिक्ट कार्य के कार्त्व कार्त्व वर्ष शि.उ. 2095 कार्ष्ट्र क्रिंग क्रेंग क्रिंग क् はんかのいのでのよっとってのこのはいのとのはないではないないできている。 11 20000 11 en E E su 2702 50 : 11 (7 3/ 7 E0 7 7 7:)

क्रिकेश क्ष्रका : क्रास कर्षा क्रिकेश कार विकित्त वार विक्रिकेश कार विद्वार त्र १ छ छ । कि सार हो । कि सात है । कि सात के सार कि सात कि सार है। उर्ष्टि:। श्रुं कुर्वा व्याय यात कार्य व्याप व्यापन्या । त्यापन おってき、三五 できて:11 と中 のったいれる。また:11 20 5 Agr 27 30 25 25 20 - 11011

20 05/2 Broton of the Egraphon - 11) 11

20 2 310 8 2 115年 年10 11 11: - 11 41

とのするですのこのでまーー 川がり

अट लियात्मा महत्वक्याताः - ॥ अव िक तयस्य देश

था करहन्ति स्ट्रहरू स्वर्ध हा में हर्ष क्षा है। से वाकार मिकिन का क्या में किन के में के का नाक्ष कर के का किन के । किन मार्थ क्रिक्ष क्ष्रिल्य रह्मे क्ष्रिक स्था स्था निक्ष क्ष्रिक क्ष्रि किया उत्त त्या ००० क्ष्रं का का क्ष्रें अ। किया अव विकास मिक करि ।। व्यक्षि - क उ० १ तरे। राका कर्म राधा छ द्वा के कि के कार मा कु की की है मित्र म्यान । यम्म – यम्म भाषा धर्मा हित्य म्या निविष् ध्यात न्यात प्रकार न्यात न्या क्रिकेश भूमका की प्रक का के क्षिता । क्षेत्र प्रक - क कि का नि ०५ में हिंदी क्षिक्त न्यामें कर प्राप्त कर का मा कि मिला। ह्या में प्राप्ता। 2, Franco 11211 900 ax x 2, 8, 5000 At Mono Adil 29: 23:29 क्षा होता है। है हे हिंदी है कि हिंदी है कि है है। कि है है। कि कि है। कि कि है। कि कि है। कि कि है।

क्ष्मित्रा प्रकार क्ष्मित्र का क्ष्मित्र क्ष्

उन्हें ग०। इं हिन्दि । यह अपन्य प्रकाद के के । यह कि यह । यह के । यह कि यह । यह के ।

॥ था०॥ धन महि नाक्ष का वः। नाम्य प्रकृष्टिय क्षियं व्या । एक व्या । एक व्या । विष्य व्या । विष्य व्या । 8 क्री क्र की के हिने । व्याक्त क्रिक्ट क्री हमें की दे! । क्री स्कुर क्री प्रकृत । क्री प्रकर क्रका । हिल्ला क्यों वे । हिक्यों वे क्रिके । क्या क्षेत्र क्षेत्र के के के के के के के कह मकी। क्वार्यक यथा। ६ क्वार्यम् १ ६ क्या उठ १ क रहे। १ कि मा की ಮಗ್ಗೆ ಶ್ರತ: 1 ಮನ್ನೇ ಹೃದಯೇ 1 ಹೃದಯಂ ಮಡು 1 ಕಹಮಮ್ಮತ್ 1 ೬ಮ ತಂ शिक्टि। प्रकृति और अर्डि के जाः। अरिडार्से क्रिकेश कि प्रकरं के ६ कर क्या भी। हिन्दा उ० शक्ति। क्षेत्री की। विस्ति की। विस्ति। ಶಿರ್ರರ್ ಶಿರ್] 1 ಶರ್ರಗಂ ಹೃದಯೇ 1 ಹೃದಹು ಮು 1 ಕಿಹ ಮ ಮೃತೇ 1 ೬ ಮೃತ್ಯ ह्या का का । हर कर की में। हर्मा के कि कि कि कि कि कि ಇ उ: । ಬಲಗಂ ವೃದಯ್ಯ । ವೃದಯಂ ಮಯ। ೬ ಹಂತಮ ತೆಗೆ ೬ ಪ್ರಕ್ಕೆ ಬಿರ್ಜನ್ といるできていることがはないないであるとのである。ことにいるでは 

ಶಿತ: 1 ಕಿತ್ ಹಿದ್ದರ್ಶೆ 1 ಹಿದ್ದರ್ಯ ಸಯ 1 ಆ ಪ್ರಸ್ತುತ್ 1 ಆಸ್ಟರಂ ಬರ್ಡ್ ಕೆ 1 क्रक्ट स्या क्रियाक्षणमार्थ। क्रियः क्रियाक्ष क्रियाक्ष क्रिया यकार वर्षा नार्या क्षेत्र । ८०३४ वर्ष द्वा निर्दाः॥ प्रेक्ट मण्डल भूषे व्यक्ष्याक्षणकर्तः। क्षणक्ष्य क्ष्मिकी भिष्या विष्ट भाजात क्रिथिशे । हाकार्य स्वरहस्त्रम् व्यावकारहा । य न्द्र द्वा विश्वकार्य छ० भीड में ये प्रश्नि क्षेत्र ॥ का विश्व क्षेत्र विश्व के विश्व क्रिक्षिट की वाक्ष का कि कर क्रिक्र क्रिक्ष । स्थाप क्र コをのいるのではいるのはいのうとかいるのかのでのかのからなる म भिल्न २०॥ य० वर्षे १६०३० वर्षे के वर्षे १६० वर्षे उह् त्र । त्रिष्ट हें व व्य काय्याय क्र क्र क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष विष्ट क्ष ॥ 到初心心が回者公理如此人公正: 医多、思可知为他公公内。因为他的 थ्यात्रमा भ्यात्र भ्यात्र । हा का कि विष्टा क्या विष्टी भ्या 川谷の川至りのからのなるとはは一川田田のからからからからからからから र्ग्यः शक्तास्ति हर्म्य व्या

॥ २०॥ सक्षी ह्या १० व्या विष्ण सक्षी ह्या १०॥ व्या १०॥

SA

॥१०॥ भर्य भर्य ता अभर्य भर्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य ।॥ १० व्या प्रत्य प्रत्य ।॥ १० व्या १०॥

॥१०॥१५ व्याव्य त्यः ॥१५ व्याव्य त्यः १५ व्याव्ये १४ व

112011 20日本ができるが、1120日本はない、からまるは、12011 112011 20日本のは、112011 112011 20日本のは、112011 112

xx: 11 70,2240011

|| 2011 が治れたでのなるが:|| 本名になるな: 本本にを持えるが:|| 治の || 2011 では、2011 では、2011

112018252413424100 72: 11 22544342 200 20: 20 255442 20 2

भगवर वीरगव्यत्यः ७ वित्युक्तिः त्रयक्षित्य = भ्यम् द्वार्य वर्षे र्जारिक नी जिल्ह = १५० वर्ष = अत्राम् व्याप्त 2000 म्बाराक युश्यक = र्श्याप = म्हारहा दियहा क् रैं - व्यक्षेत्रियम् रहा इक्ट इकी मीराक = ४० व्या रहर 25 ळवाळ वर्गळ = कायर. = ひある かってん 250 राष्ट्र क्रिक्ट = क्रिक्ट क्रिक्ट = WXX B SA अट्यावर विज्ञाल = हर्मार क्रिक = 的知识成为 यक्ष अद्भारत = क्रिक्ट व्यक्त = यक्ष

प्राचित्र वह । स्थार स्ट्रिस्सी विक्रम् । यह स्थार क्षित्र क्षेत्र क्

11 あえんえをのは至しのでんなんのとというのかにいい

। कर् यः ज्याम्यामान्ति ।।

।। थिक्यारिक्स् मर्केट्स वी क्षेत्रमीत्र व्यक्तिक । यम मा स्मित्र रिक. मक्र ॥ दे हि के क में क्र का का ॥ भिष्ठी हा कि के क्र क्र का का कर करिया मा 112011 यक्षेत्र, द्वा १६० १६ वर्षे १८ १ देश या स्था । स्ट्रिय स्था १०६ क्रिक्ट निक्त मार्थ ।। या व्या ।। या या विका ।। क्रिक्ट विक्रित्।। 11200 रहे. रहे स्प्री 3 रहे में स्थाउ में में स्थाउन के दीर उन्न के रिया ॥६०॥ अद्यागा अध्या अद्या इं ४०३ मे० व्यः। अवृत्तरम् वृत्वः। यम 者長二三年本本町の下山木のかとこの中間の本、か、出町に本本が大学 य्यक्षि ।। या कि विश्व कार्याः। व्याक लाहिन थ्या कर तः। व्यक्ता। उद्भारम् म्या अवली ॥ स्ट्रिय मित्र ॥ रिक्षा जात्र के व्यक्ति के श्राहः। हमी कि वर्षे विष्टे के व्यक्ति। हमी भें かえるできるのではいからまなないなりないとうないまるのでのないのでのはのでのは (६५ग) ह्यासः स्वर्ष वर्षा कर्षा मार्ग १ वर्ष मार्थ १ मिला कार्या के कार्या निक्य के कार्या निक्य के कार्य है। यहर्षका ॥ स्थाप्य प्राच्या ।। या क्षेत्र प्रम्य ।। वा क्षेत्र प्रम्य ।। वा क्षेत्र व्या 13 46 000000 3 400 W: 11 000 of 12 11 6x . 200 20 de 12 12 12 ॥ ए० ए में के वा ए वा के वर्ष के वर्ष के वर्ष के वर्ष वर्ष वर्ष अयह के अपन

म्याहिम् म्या न्या प्राहिष्ट का मार्थित १ यह विषय के मार्थित । स्यार् मार्थित १

उन्नित्य के व्या कारणा प्रमित्य है या असी त्यह दिया

प्रक्षिण क्रम् । क्रान्ति महिना क्रम् । क्रान्ति महिना क्रम् क्रम् क्रम् क्रम् । क्रम् विकार क्रम् विकार क्रम्

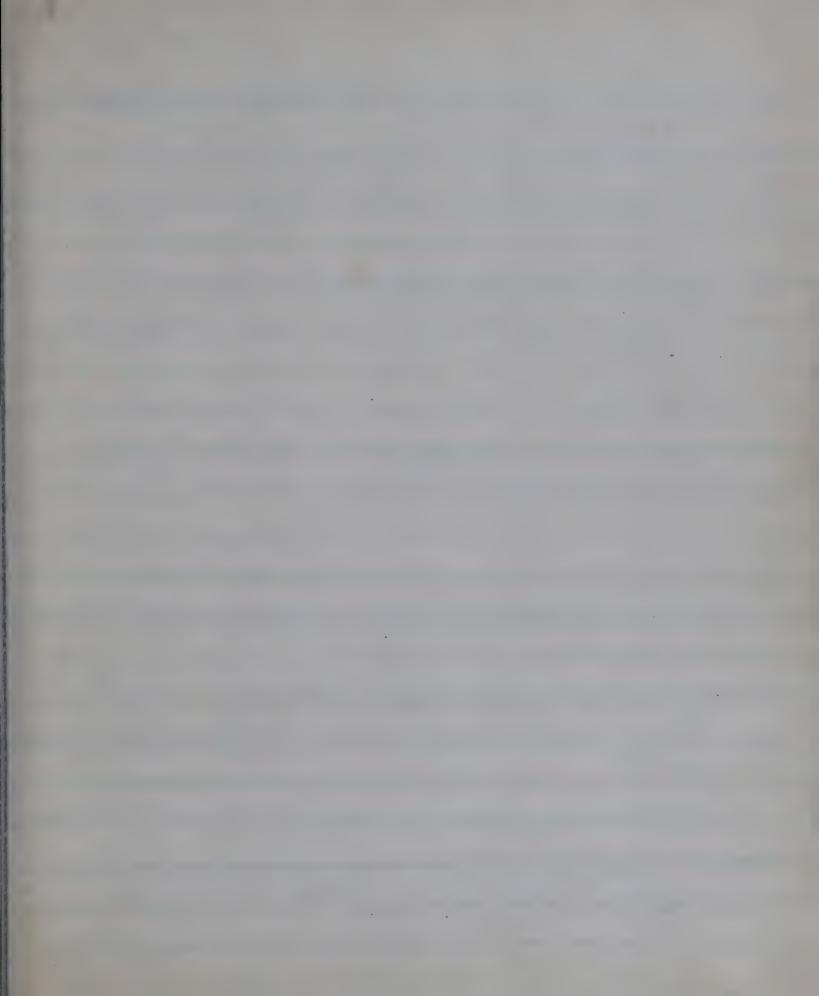
मी क्राया क्रिय पंत्र क्रिया मिर्या क्रिया मिर्या क्रिया क्रिया मिर्या मिर्या क्रिया मिर्या मिर्या क्रिया मिर्या क्रिया मिर्या मिर्या मिर्या क्रिया मिर्या मिर्या

न् १० १० ३०। यद्वा प्रमा क्या किया किया विकास का विकास कर । का या न क्यरकाव अधिक देश हैं है। सक्ष त्रिक क्ष्रिक क् क्षाक्त्री १९५ ज्या व व्या: । असी रक्षा क्ष्म क्षा क्षा क्षा कि क्षा का हारी त हरू यहहरमाप्य। क्षत्र श्रीक्री का ब्रिक्श क्री का क्रिक्श प्रहें व्याधी क्षणा व्यथितम् स्यापा हक्ये व्यव्या व्यक्ष क्ष्या विश्वाहित हिंगी व्यवायः। सक्षेत् क क्वा व्यवस्थित्यम् त्र लाधित वक्षा त्र । व्यवस्थित्य अर्में प्रकृति । कीर अर्थ अर्थित प्रमुक्ष भूमिक और कर 100 र 30 ठव का उर उहा ७४० मन्त्रा की व्या क्वा क्वा कर का किया कर का कि मान न किल्यों क्रिया प्रतिन किल्यों प्रतिन ति किल्यहर्ष्य प्रतिन किल्यहर्ष्य गु॥ ७०० एकार्न मृत्यू वीस्ट्रा व ग्रास्ट्राव्य व्यवस्थित एका मृत्यीर द्वार निन्ध्यकेत्रा कर्रे यह प्राथम्य कार्य कार्य कर्य प्राथमित कर्य वर्ष क्षेत्र क्ष्रा अवस्था के स्वर्ध के अवस्था कि स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के

व्यक्षेत्र श्रष्टाम् कर्याः। उव्य क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा विष्ट्रमा यक्ष्य क्षेत्रका क्ष्रिक क्ष्रिका क्ष्रिकार क् या दः क्री हर्द्ध कुर्ता का क्या कि । व्याच्या क्षेत्र विका क्षेत्र क्षेत्र कि का क्षायम् मुखः। ६ मूर कर्षुः क्रमा क्षा क्षित्र क्षेत्र ६ क्रम क्षित्रक्ष व्या हरा। व्या वर्षाय मिर्व ह्या। वयः मिर्व क्षेत्र प्रचर्यः प्रक्षेत्रस्य ग्रित हे व द्वा क्षेत्र हे विष्ट के विष्ट क वीर्व। अरक्षित्र,०भाउत् वर्षा वर्षा वर्षेत्र प्रवास्त्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्रीकुर एकः। क्रीक्ष्युक्तिकी व्याव्या १० २० १० । त्यात्रास्य १३० १ १। स्वया धिरहें केर ह कार ही कार्त का कर कर कर कर मा की की किर की का का भी भागा चार्या अर्थि के किया अरा । अर्था कि सी दे के या। अर के के थें भा और एकः। शाक् हर्ष क्याउति करा वित्य क्या अधियाः क्या अधियाः क्र तर्र हा । येत हल्हा निव्हा व्यायकार्यः क्र त्र क्र व्या व्याधान्यः म्म में में हिल्ली क्रांप के क्रिक क द्धः क्रिया क्षयः कर्ण क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया की निवास के वास के निवास के निवास के निवास के निवास के

अस्ति क्ष्र क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष विश्व क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष विश्व क्ष्रिक्ष विश्व क्ष्रिक्ष विश्व क्ष्रिक्ष क्ष्रिक्ष विश्व क्ष्रिक्ष क्ष

हिरण्यगर्भः समवर्तताम्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाखार पृथिवीं चासुत मां नस्मे देवाय हविषा विधेम ॥ तमस्ग यः प्राणता निमिषता महित्वैक इद्राजा जगता वभूव। य ईशे अस्य द्विपद्भत्ष्यदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ य आतमदा बलदा यस्य विश्व उपासित प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य ज्यामृतं यस्य मृत्युः बस्मे देवाय हविषा विधेम॥ यस्येमे हिमवन्ती महिता यस्य समुद्र रसया सहाहुः। यस्येगाः प्रदिशो यस्य बाहु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ मं ऋन्द्सी अवसा तस्त्रमाने अभी होतां मनसा रेजमाने। यनाधि सूर उदिता व्येति करमे दैवाय हविषा विधेम ॥ येन चीक्या पृथिवी च दुढे येन सुबस्तिमितं येन नाकः। यो अन्तरिशे रजरो। विमानः बस्मे देवाय हविषा विजेम॥ आपे। ह यनमहती किवमायन् दश्नै दधाना जनयन्ती रिग्निम्। ततो देवानां निरवर्ततास्त्रेकः कस्मै देवाय हविषा विजेम ॥ यश्रिदापी महिना पर्यपद्यह चं द्याना जनयन्ती रिग्तिम्। यो देवषाधि देव एक आसीत्नसमे देवाय हिवा विधेम॥



अर्थित्र क्षण्य के अर्थित अर्थित अर्थित क्षण्य निर्मा क्षण्य क्य

क्षाकः भः राम दिष्य विष्य विषय दिन द्रिय कि क्षा क्षा क्षा कि ।

क्र केंद्रा हुने प्रवाह केंद्र क्रिक क्रिक

टिक्री क के हिं क्षण के का के के के के के के के के के कि नाह ।।

क्रिया मेर्डि १६६३ इ दिस् में किसः मेर्वा स्थान सम्मेरियम क्षीरिक्त । क्षेत्र : क्षेत्र : । कर्म का द्रा कर । कर्म वित्र में र वा १९३ स्वर्धा का उपा का निष्य । उपी न्या मिल पूर्व कि पूर्व । क्षित्रम्य कर्का हिन क्षेत्र क १८५१म्यू या के अंधित हिल्ली में विकास के मार्थित के मार निस्की । भेरः के उद्धान के अवस्थित अवस्थित अवस्थित ६४५ ६३% भेग: ६०में: इंड क्षे क्षेत्रः क्षावरः भारम्हे व्यक्षित्र स्थाय्या ६१ द्र यह ॥ एमदाः स्ट्री निया। मः भी भवतः। भर्ष भर्षे निर् निया मिन्न रीत्र म्यून्येत रे० द्यः व्या म्यून्य । राज्या मार्थे न्या मार्थे 

र्सः स्व वे वे व्यक्ति व राम्या व्यक्ति के विष्य के विष्य के विषय के व

क्षिक्ष का क्षित्र के क्ष्रिया के के क्ष्रिया के क्ष्रिया के क्ष्रिया के क्ष्रिया के क्ष्र

हम् १६०० राष्ट्र उठा है का मार्य मार्य मार्य है मार्य निकार का मार्य के मा

द्रित्र क्रिया । क्रिया हिस्स्य क्रिया । क्रिया है। क्रिया हिस्स्य क्रिया है। क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क्र

ಯಪ್ಪಾಗ್ರತ್ಯ ಹಾಗ್ಯಪ್ರತ್ಯಾತ್ರ ಪ್ರಪ್ರತ್ಯ ತಪ್ಪನ್ನ ತಪ್ಪವ್ಯತ್ತಿ।

क्षाय कर्ष्टिशिष्ट्रभूत क्षण्डः विद्याया वर्ष्ट्र क्षण्डः व्यवक्षित्र कर्षः

व्यक्ष्यं क्राम् क्रिक्ष कर्षे क्रिक्ष कर्षे क्रिक्ष क

क्षाप्ता कर्म के क्षित्र के क्षित्र के क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र

ಯಕ್ಷಿತ್ರತ್ಯೆ ಕ್ರೂ ಸರ್ವನ್ಯುತ್ಯ ಪ್ರಾನ್ಯಾಕ್ ಮಾತ್ರಿಕ್ ಪ್ರಾನ್ ಪ್ರಾರ್ಥ ಪ್ರಾನ್ ಪ್ರಾನ್

至至五十年五年四年四年四年四年四年四年四年四年四年五年四年十二年

年日はの美元五年を日の日の大の日の日の日の日の日の日の日の日の日日日日

अर्थीः गाम पुरुषार्थः आपवर्धस्य धर्मस्य अर्थाय प्रयोजनाय निहु उपकल्पित समर्थी भगति। कामोऽपि धर्मिकान्तस्यार्थस्य लाभायं नीहे समृतः। इन्द्रियप्रीतिरे व कामस्य न लाभः न मुख्यं प्रयोजनम्। यावता जीवेत तावानेव कामस्य लाभ इति। जीवस्य जीवनस्य तत्नजिज्ञासैव अर्थः प्रयोजनम्। इह लोके यभार्थः कर्मभिदृष्टः सोऽर्थः फलं नभगति।

## अं ततस्त पर्मालने नमः

अचिन्याव्यक्तन्त्याय निशुणाय गुणात्मने । समस्त्रनगदाधारम्त्ये अस्पे नमः॥

नार्यणं नमस्कत्म नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं तता जयम्दीर्यत। धर्मस्य ह्यापवर्णस्य नामिऽर्यावीपकल्पते। नार्थस्य धर्मेकान्तस्य कामा कामाय हि स्मृतः॥ नामस्य नेद्धियप्रीतिर्लाभी जीवेत यावता । जीवस्य तत्त्वजिज्ञासा नार्यो पश्चेह कर्मानः॥ वदानितत्वविद्सतत्वं याज्ञानमद्यम्। ब्रह्मित परमालेति भगवानिति शब्दाते । तंब्द्रहथाना मुनयो ज्ञानवैराव्ययन्तया। पञ्यन्मात्मिन चात्माने अत्तया अत्यक्तीतया ॥ तस्मादेकन मनसा भगवान सात्वतां पतिः। श्रीतव्यः कीर्तितव्यश्य ध्येयः पूज्यश्य नित्यदा॥ शुण्यती स्वक्थां कृष्णः पुण्यत्रवणकतिनः। हृद्यनास्या समद्राणि विध्नोति सहत्सताम्। अतो वै कवयो नित्यं भत्तिं पर्मया मुदा। वासुदेवे भगवति कुर्वन्यात्मप्रसादनीम्। तदा का रजस्तमाभावाः कामलो भादयभ्य ये। चेत एतेरनाबिद्धे स्थिते तन्ते प्रसीदित ॥

सन्व त्रास्त्र अति प्रति । उत्तः पर प्रकार एक द्रास्य पति । ग्रेस्टान व त्रिक्ति च स्ति । अस्ति तत्र खल् सन्ति ना निष्य स्थान । वासुदेवे भगवति अक्तियोगः प्रयोजितः। जनयत्याशु वैदार्थं ज्ञानं च यद्हैतुक्तम् ॥ आतमीही नुगामेष कल्प्यते देवमायया। सुहदुहदुदासीन इति देशत्ममानिनाम्॥ एक एव परो ह्यात्मा सर्वेषामपि देहिनाम। नानेव गृहाते मुहैर्यथा ज्यातिर्यथा नमः॥ देह आद्यन्तवानेष द्रव्यप्राणगुणात्मकः। आत्मन्यविद्यया इतः संसार्यति देहिनम्॥ नात्मनी इन्येन संयोगी वियोगश्यासतः सति । तद्धेत्स्वात्तत्प्रसिद्धे ईग्रूपाभ्यां यथा रवे : । जन्मादयस्त् देहस्य विक्रियानात्मनः कचित्। कलानामिव नैवैन्दोर्मितिह्यस्य कहरिव ॥ यधा श्यान आत्मानं विषयान फलमेव च। अनुभुद्धे डप्पसत्यर्थे तथाप्रीत्यब्धो भवम्। बलरामस्य-अवश्र

शक्तियोगन लिस सम्यक्प्रणिहितेश्यले । अपक्षत्वन वे इवें मार्यां च तद्पाश्रयाम् ॥ यया सम्माहिता जीव आलानी त्रिगुणात्सक्रम् । परोऽपि मनुतिश्नयी तत्तृते वासिपद्यते ॥ चीराणि किं प्रथित शन्ति हिनान्ते जिहाँ नेवाद्गियाः फलशतः सरिताः प्रशुक्ति । रुद्धा अहाः निप्रवित्ति जीत नीय नेन्नान्ति । परिपाद्धानिते कावयी धन दुर्भदीन्यान्ति ॥

एवं स्विते स्वत एव सिद्धः आत्मा प्रियोज्यो मण्नानननः। ते निवृतो नियतार्थो नजेत संसारहत्वरमञ्च यन ॥

स्वातं तेन समस्ततार्थरालिले सर्वापि दत्तावानेः यहानां च कृतं सहस्रमसिला देवात्र्य सम्पूर्णिताः। संसाराच्य समुद्धृताः स्वित्तरस्त्रेलो कानूज्याऽप्यसी यस्य ब्रह्मावे-वारणे क्षणमपि स्थियं मनः प्राप्तुयात् ॥ —स्मृतिवचनम्

## । शतभ्लोकी।

॥ श्रीमच्छङ्करभगवत्पादाचार्यवर्येश्यो नमः॥

दृष्टांन्तो नैव दृष्टः त्रिभुवनजठरे सहुरोर्ज्ञानदातुः स्पर्शश्चेत्तत्र कल्प्यः स नयति यदहा स्वर्णतामस्मसारम्। न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरणयुगे सद्गुरुः स्वीयशिष्य स्वीयं साम्यं विधत्ते भवति निरुपमस्तेन वालीकिकोऽपि ॥१॥

यद्ग्धीखण्ड वृक्ष प्रसृतपरिमलेनाभितोऽन्येऽपि वृक्षाः श्यत्सीगन्ध्यभाजोऽप्यतनु तनुभृतां तापमुन्मूलयनि । आचार्याछान्धवाधा अपि विधिवज्ञतः सन्निधौ संस्थितानां नेधा तापं च पापं सक्रणह द्याः स्वीतिभिः शालयनि ॥२॥

आत्मानात्मप्रतीतिः प्रथममभिहिता सत्मिमथ्यात्वयोगात् द्वधा ब्रह्मप्रतीतिर्गिमनिगदिता स्वानुभूत्योपपत्या। आद्या देहानुबन्धाद्भवति तद्परा साचसर्वात्मकत्वात् आदौ ब्रह्माहमस्भीत्यमुभव उदिते खल्विदं ब्रह्म पश्चात्॥॥॥

आत्मा चिद्धित्सुर्गातमानुभवपरिचितः सर्वदैहादियन्ता सत्येवं मूटबुद्धिर्भजात नन्जनो नित्यदेहात्मबुद्धिम्। बाह्येऽस्थिरनायुमज्जापलक्षिर वसाचर्ममदीयुगन्तर् विषमूत्रश्लेष्मपूर्णं स्वपरवपुरहो संविदितापि भूयः॥४। देहस्तीपुत्रमित्रानुचरहयवृषास्तीषहेतुर्ममैत्यं सर्वे खायुर्नयन्ति प्राथितम्लम्भी मौसमीमांसयह। एते जीवन्तियेम खवहतिपटवो येन सीभाग्यभाजः तं प्राणाधीशमन्तर्गतममुनैवमीमांसयन्त। ६॥

किरिलीटः कथा जित्पदुमतिर्भितः कण्टकानां कुटीरे कुर्वस्तेनेव सामं व्यवहतिविधये चेष्टते यावदायुः। तहु ज्जीवीऽपिनानाचरितसमुदितेः कर्मभिः स्थूलदहं निर्मायात्रैव तिष्ठन्तनु दिनममुना साम मभ्यति भूमो ॥६॥

सीनुवेन त्याप्नेव संस्वाठ रभूतये भीषयन् यश्च मुग्धान् मता त्याप्नी इहामित्यं सनर पशु मुखान् बाधित किंनु सतान् । मतास्त्रीवेषधारी स्त्यहामिति कुरुते किंनदो भतुरिच्छां तद्धारीर आत्मा पृथगनुभवता देहतो यः स साक्षी॥७॥

स्वै वाल रीदमानं चिरतरसमयं शान्तिमानतुममे द्राष्ट्रां खर्जूरमामं सुकद्लमयवा योजयत्यम्बिकास्य। तद्वेतोऽतिमुढं बहुजननभवान्मी ढ्यसंस्कारयोगाद् बाधोपायेरनेकैरवशमुपनि घद्वोधयामास सम्यक्॥ ७॥ यतीत्या त्रीतिपानं तनुयुवतितन् जार्थमुख्यं सतस्मात् त्रेयानात्माथ शोकास्पद्मितरदतः प्रेय एतक्यं स्यात्। भायाद्यं जीवितार्थी वितरतिचवपुः स्वात्मनः श्रेय इच्छं = स्तस्मादात्मानमेव प्रियमधिकमुपासीत विद्वान्न चान्यत्॥ ९।

यस्माद्यावित्रियं स्यादिहिह विषयतस्तावदिस्मिन् प्रियतं यावहुः सं च यस्माद्भवति रालु ततस्तावदेवाप्रियत्वम्। नैकस्मिन् सर्वकालेस्त्युभयमपि कद्यप्यप्रियोऽपि प्रियः स्यात् प्रेयानप्यप्रियो वा सत्तमपि यतः प्रेय आत्मार् यवस्तु। १०॥

श्रेयः प्रेयश्र लोके द्विविधमभिहितं काम्यमात्यन्तिकं च काम्यं दुः सेकबीजं क्षणलविदसं तिच्चिकीर्षन्ति मन्दाः। ब्रह्मेवात्यन्तिकं यन्तिरतिश्यसुरुष्यास्पदं संश्रयन्ते तत्त्वज्ञास्तच्य काठोपनिषद्भिहितं षड्डिधायां चवल्ल्याम्॥११॥

आत्माम्भोधेस्तरङ्गाऽसम्यहिति गर्मने भावयन्तासनस्यः संवित्सूत्रानुविद्धो मणिरहिति वाचेन्द्रियार्थप्रतीतौ। हृष्टोऽसम्यात्मावलोकादिति शयनविधी मग्न आनन्दिसिन्धा-वन्तर्निष्ठो मुमुशुः सखलु तनुभृतां यो नयत्येवमायुः॥१२॥ वैराजव्यिष्टिन्पं जगद्विलिमिदं नामन्पातमकं स्यात् अन्तस्थाप्राणमुर्ण्यात्प्रचलित्च पुनर्वेति सर्वान्पदार्थान्। नायं कर्तान भोत्ता स्वितृवदिति यो ज्ञानविज्ञान पूर्णः साक्षादित्यं विजानन् स्वहरति परात्मानुसन्धान पूर्वम्॥१३॥

नैवैद्यं ज्ञानगर्भं द्विविधमिमिहितं तत्र वैराग्यमाद्यं प्रायो दुःखावलोकाद्भवति गृहसुहत्पुत्रवित्तेषणादेः। अन्यज्ञानोपदेशाद्यद्वितिषये वान्तवद्भयता स्थात् प्रव्रज्यापि दिधास्यान्तियमितमनसाँ देहतो गेहतश्च॥१४।

यः किंश्रीख्यहेती स्त्रिजगति यतते नैव दुः स्य हेतीः देहें इंता तदुत्या स्वविषयममता चेति दुः सम्पदे दे॥ जानम् रोगाभिघाता हानुभवति यतो नित्यदेहात्म बुद्धः भाषीपुत्रार्थनारो विपदं मध्य परामेति नारातिनारो॥ १६॥

तिष्ठन्गेहेगृहेशोऽप्यतिथिरिव निर्णधाम गन्तुं चिकीर्षुः देहस्थं दुःखसीरूपंन भजति सहसा निर्ममत्वाभिमानः॥ आयात्रायास्यतीदं जलद्पटलवद्यातृ यास्यत्यवस्यं देहाद्यं सर्वमेव प्रविदित्तविषयो यच्च तिष्ठत्ययतः॥१६॥

शन्या निर्मोकतः साद्वहिरहिरिवयः प्रव्रजन् सीयगेहात् धायां मार्गद्रमात्यां पथिक इव मनाक् स्त्रयेहेह संस्थाम् । सुसर्याप्तं तरभ्यः पतितफलमयं प्रार्थयेद्भैश्यमन्त्रं स्वात्मारामं प्रवेष्टुं स खलु सुखमयं प्रव्रजेहेह तोऽपि ॥१७॥

कामी बुद्धावृदिति प्रथमिन मनस्युद्दिशत्यर्थजातं तर्गृह्वातीन्द्रियार्थेस्त दनिष्ममतः क्रीध आविर्भवेच्य । प्राप्तावर्थस्य संरक्षणमति रुदिता लोभ एतन्त्रयं स्यात् सर्वेषा पातहेतुस्तिदेह मतिमता त्याज्यमध्यातमयोगात्॥१७॥

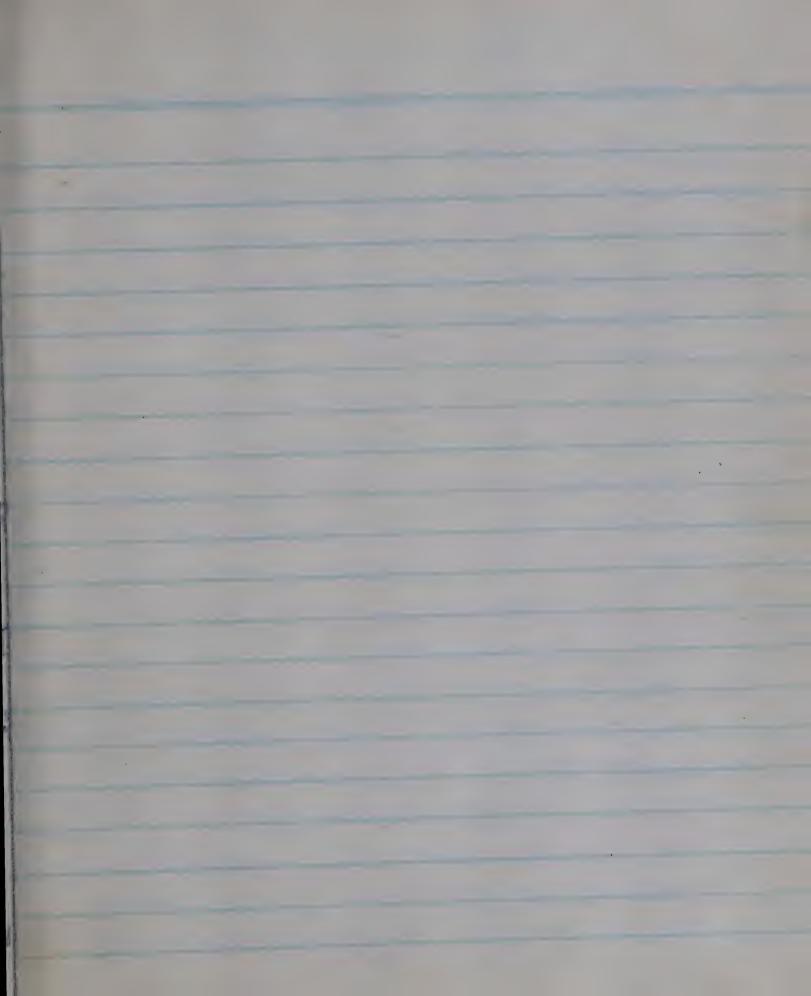
रानं ब्रह्मार्पणं यितियत इह नृभिः स्यात धमाक्रोधसँ ज्ञा अद्धास्तिक्यं च सत्यं सिद्ति परमतः सेतुसँ चतुष्कम्। तत्स्याद्वन्धाय जन्तारिति चतुर इमान् दानपूर्वेश्यतुर्भिः तीर्वा श्रेयोभृतं च श्रयत इह नरः स्वर्गति ज्योतिराप्तिम्॥१९॥

अन्नं देवातिथिभ्योडपितममृतिमिदं चान्यया मोचमन्नं यश्र्यात्मार्थे विधन्ते तिद्द निगदितं मृत्यु क्पं हि तस्य। कोकेडसी केवलाची भवति तनुभृतां केवलादी चयः स्यात् त्यन्ता प्राणाभिहोतं विधिवदनुदिनं योऽश्वृते सोऽपि मर्त्यः॥२०॥ लोने भोजः स एवार्पयति गृहगतायार्थिने इन्ने कृशाय यस्तस्मे पूर्णमन्तं भवति मखविधौ जायते जातशतुः। सर्वेम्नान्तार्थिने यो ऽर्पयति न स सखा सवमानाय नित्यं संस्तायान्त्रमस्मादिमुख इव परावृत्ति मिच्छे त्कद्यात्॥ २१॥

स्वाज्ञानहानहत् जगदुद्यलयी सर्वसाधारणी स्ता जीवेष्वास्वर्णगर्भ श्रुतय इति जगुर्द्यते स्वप्रबाधे। विश्वं ब्रुह्मण्यबोधे जगति पुनरिदं ह्यते ब्रह्म यद्दतः शुक्ती रीप्यं च रीप्येजधिकरणमथवा ह्यते ब्रह्म यद्दतः

तुन्छतानासदासी द्वानकुसुमवद्भेद्दं ने सदासीत्र किन्वाभ्यामन्यदासीद्व्यवहतिगति सन्नास कोकस्तदानीम् किन्वविगेव शुन्ती रजतवद्परोनी विराह्न्यामपूर्वः भार्मण्यात्मन्यथैतत्कुह्कसलिलवत् किंभवेद्वरीवः॥२ः

वन्धी जन्मात्ययात्मा यदिन पुनरभूत् हिं मोश्रीऽपिनासीद् -यद्गद्रातिर्दिनं वानभवति तरणी किन्तु दृग्देष एषः। अप्राणं शुद्धमेकं समभवद्थ तनमायया कर्त्सं व तस्माद्न्यव्यनासीत्परिवृतम् जया जीवभूतं तदेव॥२४॥

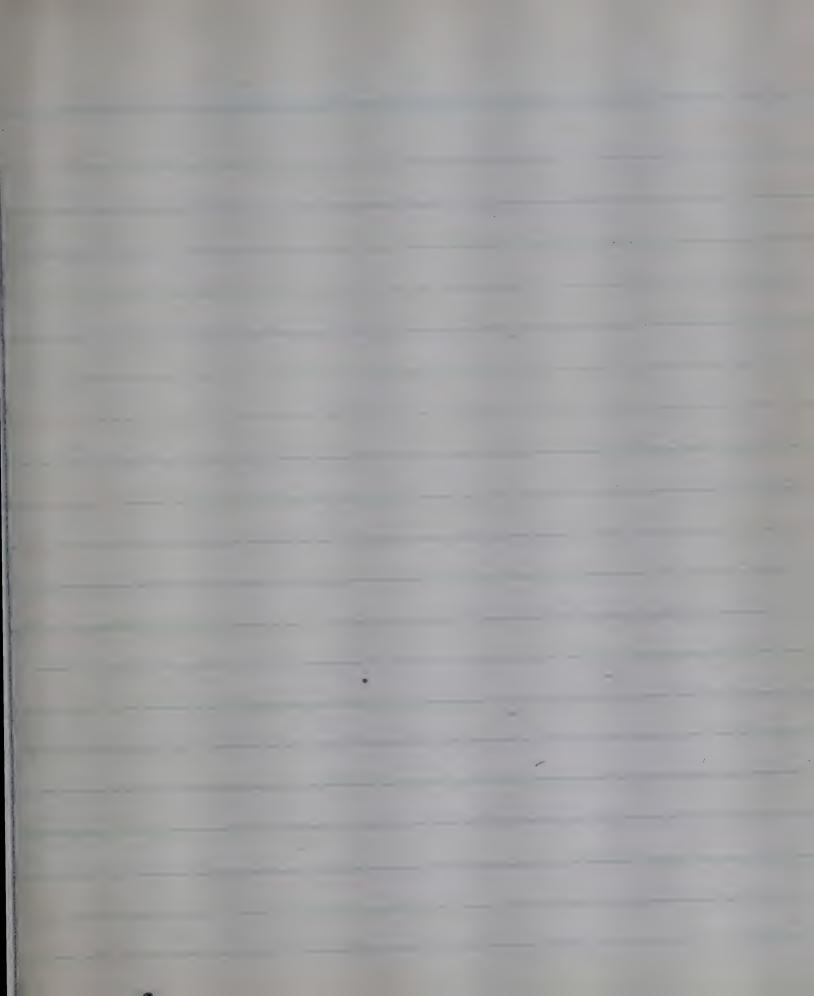


## उलाइँ श्रम्

空南多可母性至日日五四年五岁。

20 32 00 500 : 1 00 00 1 50 45 1 2 2 2 50 1 1 भित्रवाह । या दे विष्य । या विषय । विषय । विषय । विषय । त्र्थणीय राज्य । ज्वन्य । ज्वन्य । ज्या विष्णु । अध्यव में री। コマダンシャのは13の日の日の日の日の日の日のは1315の日のは1 22 22 nor 1 22 20x 1 22 120x 13 600 12 2800 10x 1 37 Sarat IEN MOR 18 DUNG 180 FOTTO あれてかのでしてのかりのでしというではのでしまいるでしてして きのからないからかのでしてのからからしているかのかし! थया द्वाका। मुंधाराजारे ती। हर देते। हकी विकार र के वा० व्याल । नी के ० के ला। नी के की का विष्य है व 8 अर्डे काळा। प्रत्रहाका । क्राय्य क्ष्मा । क्षाय क्ष्मा । क्षाय क्ष्माय । क्षाय क्ष्माय । क्षित्र । क्षित्र । यह विश्व । यह विश्व । विश्व विश्व । 420×445000 125 mfw 12005 200 1800 000 1 きょうでない。まののものとしなべるがしのからからない。 रम् उड्डिला कि हिल्ला है। हिला हिला हिला हिला है। क्या वह त्या विश्व के विश्व । क्षेत्र के विश्व । क्षेत्र के विश्व । क्षेत्र के विश्व । क्षेत्र के विश्व विश्

अवस्य भी द्वाया। ह्या प्राप्त । यह क्षेत्र व्या । यह व्या विष्ठ व्या विष्ठ व्या । यह व्या विष्ठ व्या विष्ठ व्या । यह व्या विष्ठ व्या विष्ठ व्या विष्ठ व्या । यह व्या विष्ठ व्या विष्ठ व्या । यह व्या विष्ठ व्या विष्ठ व्या विष्ठ व्या विष्ठ विष्ठ व्या । यह विष्ठ विष्ठ व्या विष्ठ विष



यं ब्रह्मवरुगेन्द्र रद्रमरतास्तुन्वनि दिव्यैः स्तिवैः विदैः साङ्गपद्रममापनिषदेर्गायनि यं सामगाः। ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यनि यं योगिनो यस्यानां न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥

श्री भगवानुवाच-

ऊर्ध्वमूलमधः शास्त्रमध्वत्यं प्राहुर्व्यपम्। छन्दांसि यस्य पणीनि यस्तं वेद स वेद्वित ॥१॥ अध्योध्वे प्रसृतास्तस्य शास्त्र गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः। अध्य मूलात्यन्यन्तानि कर्मान्वन्धीनि मन्त्यलोके ॥२॥ न सपमस्येह तथोपलभ्यते नानीन गदिन च सम्प्रतिष्टा। अभ्वत्यमेनं स्विन्दमूलमसङ्ग्रास्त्रेण दृदेन छित्वा ॥३॥ ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन् गता न निवर्तानी भूयः। तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृतिः प्रसृता पुराणी ॥४॥ निमनिमोहा जितसङ्ग दोषा अध्यात्मनित्या विनिन्तकामाः। द्वन्द्वेविम्ताः स्वदः यसंदीः गन्छन्यम् यः पदमव्यमं तत्। ५ न तद्भासयते सूर्यों न शशाङ्की न पावकः। यज्ञता न निवर्तन्ते तद्दाम परमं मम।६॥ ममेवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः। मनः पष्ठानीन्त्रियाणि प्रमित्यानि कर्वति॥७॥ शरीरं यदवाष्ट्रीति यच्चाप्युलक्रामतीश्वरः। गृहीतीतानि सँयाति वायुर्गन्धानिवादायात् १७।

भीतं चं शु: स्पर्वनं च रसनं घाणमेव च । अधिष्ठाय मनभ्यायं विषयान्यसेवते ॥ ९॥ उत्कामन्तं स्थितं वापि भूज्जानं वा गुणान्वितम्। विम्दा नान् पश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचश्चुषः॥१०॥ यतनो योगिनभीनं पश्यन्यातमन्यवस्थितम्। यतन्ती इप्यक्तात्मांनी नैनं पस्यन्यचेतसः॥११॥ यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयते ऽसिलम्। यच्यन्द्रमसि यच्याभी तत्तेजी विद्धि मामकम्॥१२। गामाविद्य च भूतानि धार्याम्यहमीजसा। पूष्णामि चीषधी: सर्ताः सोमो भूत्वा रसात्मकः॥१३। अहं वैभ्वानरी भूता प्राणिनां देहमािश्रेतः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यनं चतुविधम् ॥१४॥ सर्वस्य चाहं हिर सिन्निविष्टी मतः समृतिर्ज्ञानमपोहनं च। वेदेश्य संवेरहमेत वेद्या वेदान्तक हेर्तिदेव चाहम ॥१५॥ द्वित्री पुरुषी लोके शर्षाशर एवच । शरः सर्वाणि भ्तानि क्टरथोऽ शर उच्यते ।११६॥ उत्तमः पुरुषद्वन्यः परमालेत्युद्राहृतः। यो लोकन्य-माविश्य बिभत्यव्यय ईश्वर:॥१७॥ यस्मातः हार्मतीतोऽहमश्चरा दिपि चोत्तमः। अतो शरी लोके वेदे च प्राथितः पुरुषीत्तमः॥१७॥ यो मामेवमसम्मुद्धो जानाति पुरुषोत्तमम्। स सर्वविद्यजाति मां सर्वभावेन भारत इति गुद्यतमं शास्त्रमिद्युक्तं मयानद्य। एत दूधा बुद्धिमान्स्यात्वा तक्त्यध्य भारत

## かんえからかなななかがか

అశాణప్పు మార్చు నమ: ١ त्रमा ग्रह्म तहार हा مل مقوا على 623 - 2225: श्रव्याम् । - श्रव्याः र्वा ०० १६ ಸ್ತ್ರ ಪ್ರಸ್ತು 1 man for राधारम्या भी वर्षा ७३,जान है। ಯತ್ಸ್ಪಕ್ಷಮದಂ ತಸ್ತು 1 فعرمدمد 23 Jac ಅನಾತನ್ 6 3 Leanax 6 20 3/6 ेक अवर 697aczinor عدر "ح المساحة عا र्यकार देशका र

क स्यावर भेगांक 27 3 3000 क्राकालड 6 कर्त्य अस्ति। 6200 Jax belowing XXXOOK NOX 如何在海外的 ನವಾಶಕವಾಹ್ನಾ ಹ न्यः भवा AZIKZEKBOZ मा शरीड ए एक ಶ್ವನಾತನಾಯ .. عود الناع 62037 Ox 67 स्थित ES & DE LE LON 290/54700 -63 5/30 Mas

6 200 or SE CO ZZON 73/22/20c 2 gli x gr zrac कर्ट्ड( 35 Jax aremar 6 <u>ನ</u>ಾಸಯ ಶರ್ನಾಯ あるるいろっとして या विश्वास्ति । य राष्ट्र हिल्ल है भी कि हैं है है है है है है है हैं ownale. 6万4月(西の といるはんで & 510 5 15100 640232 and र शयका अर्थ ころのありなられ 30080 cas \$ 1200 Blelon 20078

श्रुक्रिक्रियर में प्रविक्री ज्यकी खुळा में की गुवर ಯಲ್ಲಾಯ 到空時 68 00 at 2083 ある為四回 るのるます。 300 7 PMC 27 2700 भू रहित्य way: 5000

esparararemas 200 2000000000 क् गाउँ नावर धार् अभवर वह स्त्रीकर रम् वालाका द्वावर कर्य वरी हर् हर्ष प्रध्वेष अपनिष्ट्रवेश B&3FE 78250500 8 X ( Ser El ) BUX 2018 BOT 23(3)2Jac 20170500 युव्य विश्वावा 223,000 MENOMOS Juzzace म्यार्थित प्रमाय

533705

ಶರ ಶಾಂಕಯ್ಯ

To Alkor श्रिट वस आर्ड प्र त्रश्रविद्य र्रेडिक का श्रिक य श्रे x 24 36 2424 Athre you மத்வாதுவா ೯೦೩ ಸ್ಸ್ ಖಾಯ 6030101000 603 En Eje 8 30 व्यम्बर्भाः स्माद्ध ガンとのいくがみぬくなのの ASE OF SENDE

aliemon pas

A TRACK DOLL X D

अतिपरिचयादवरेत्येतद्वाक्यं मृषैवेति मे भाति। अतिपरिचितेऽप्यनादो संसारे कस्यापिन जायतेऽवज्ञा॥ सांसारिक सुखासक्तं ब्रह्मज्ञोऽस्मीति वादिनम्। कर्मब्रह्माभयभ्रष्टं तं त्यने दन्त्यनं यथा। गते शोकं न कुर्वन्ति भविष्यं नैव मन्वते। वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति मनीषिणः॥

202: 40 x 2 (203 4 1): 60 x 2 10 20 10 1 क्रीक्षांट्रपीर्वे कान्यीहर् के कर हमर यह गरिस् ी: ध्वर्शी अंत्र प्रस्ट स्व का प्रवृ ।। क्षित्रेक्ष्युंदर प्राण्य स्व स्व हर्न हत्र हत्या क्ष्ये विश्वाद श्वर्ण हर्ने विश्वर

